Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2022, VOL- 9/69

बौद्ध धम्म में जातीवाद का विच्छेद

डॉ. सूर्यभान बुवा
पाली विभाग, कर्मयोगी तुळशीराम पवार महाविद्यालय, हाडोळती, ता. अह्मेद्पूर जि.लातूर

Paper Received On: 21 FEB 2022

Peer Reviewed On: 28 FEB 2022

Published On: 1 MAR 2022

प्रस्तावना:- वर्तमान मे जो जातीपाती का राजकारण भारी तौर से हो रहा है और जाती के नाम से ही आगे बढ रहे है, इसका सीधा असर पूरे मानव जाती पर हो रहा है | यह धारणा हजारो वर्षे से चली आई इसका विच्छेद होना जरुरी है | यह विषय पर तथागत गौतम बुद्धाने ऐसा कहा की सभी मानव जाती एक है इसमे कोई भेद नही | जैसे की अन्य प्राणी पशु पक्षी मे भेद दिखाई देता है | वैसे मानव जाती में दो ही भेद है एक स्त्रीलिंग और पुलिंग यह दोनो ही एक हैं, जैसा आदमी सोचता है वैसे ही औरत सोच सकती है| उनके आचार,विचार, रहणसह, खाना, पिना सब एकही है | इनमे केवल लिंगभेद है ऐसा तथागत गौतम बुद्ध अपने उपदेश द्वारा पुरे विश्व मे एक हलचल मचा दी| .

तथागत गौतम बुद्ध को नास्तिक वादी तत्वज्ञानी कहते है| तथागत बुद्ध यह कहते है की यदि आपको जीना है तो केवल वर्तमान मे जीवो और जो वर्तमान है वही सच है| तथागत भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश मे कहा है कि,

न जच्चा होती ब्राह्मनो |
न जच्चा होती बसलो ||
कम्मानी होती ब्राह्मणो |
कमानी होती वसलो || (सुत्तनिपात- वसलसुत्त)

अर्थात - जन्म से कोई ब्राह्मण नही होता या बनता, ना जन्म से कोई नीच नही होता वह कर्म से ही ब्राह्मण होता है और कर्म से ही नीच होता है|

ब्राह्मण याने की ज्ञानी व्यक्ती को कहा गया है ज्ञान सब ले सकते इसमे कोई जातीपाती का भेद नही होता| इसीलिए तथागत गौतम बुद्ध ने कहा है कि मै अकेला ही बुद्ध नही मेरे आगे भी बुद्ध हो गये है और आने वाले भी बुद्ध हो सकते है सब बुद्ध हो सकते है इसलिये प्रत्येक बुद्ध की न्यू रखी गई है.

उदिष्टे

1) वर्ण व्यवस्थे का विच्छेद होना |
2) समाज मे जातीपाती का प्रभाव कम करणा |

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3) समाज मे सभी मानव जाती को ज्ञान प्राप्त कराणा |
4) मानव जाती में कोई भी अंतर्भाव नही नही कराणा|
5) सभी प्राणीमात्रा पर प्रेम करूना का वर्षाव कराना |
6) राष्ट्रहीत के लिय जाती –पाती को सम्मान करणा |

गृहितके

वर्ण व्यवस्थे का विच्छेद होता है |
समाज मे जातीपाती का प्रभाव कम करणा होता है |
समाज मे सभी मानव जाती को ज्ञान प्राप्त कराणा होता है |
मानव जाती में कोई भी अंतर्भाव नही होता है |
सभी प्राणीमात्रा पर प्रेम करूना का वर्षाव होता है |
राष्ट्रहीत के लिय जाती –पाती का सम्मान करणा जरुरी है|

विश्लेषण –

जाति का मुल अर्थ है,जन्म अथवा उत्पती कि समानता कही कही प्रजाती ,परिवार अथवा वंश के लिये ही प्रयोग करते है | मगर हिंदू धर्म मे यह विशेष संथा है,जो वर्ण व्यवस्था मे ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य और शूद्र है,इसका आधार जन्म और व्यवस्था है तथा समाज,भोजन विवाह आदि प्रथाए है| जबकी वर्ण का आधार प्रकृती के आधार पर कर्तव्य का चुनाव और वृत्ती पर है|प्रत्येक जाती का आधार परंपरा से निश्चित है,जिसको धर्मशास्त्र और विधी मान्यता देती है|

पाली साहित्य में सभी मानव जाती पर तथागत भगवान बुद्ध ने प्रेम करुणा दया का वर्षाव किया है| सब्बिसो साल पहिले वर्णव्यवस्था काफी बडगई थी ऐसे देखा जा सकता है की सुमेध नाम का एक अच्युत (भंगी) जब तथागत गौतम बुद्ध रास्ते से गुजर रहे थे| तब सुमेध ने तथागत बुद्ध को आते देख कर वह रास्ते के बाजुमे छुप गया | ऐसा तथागत भगवान बुद्ध ने देखा तो उसे पुछा कि तू छुप क्यो रहे हो तब सुमेध ने कहा कि में एक अछूत हु ऐसा मानते है की अचूत का मुह देखना अशुभ होता है| इसी लिय मै छुप रहा था | तब उस समय सुमेध को आपणा शिष्य बनाया | सुमेध ने कहा कि मै तो अछुत हु तब तथागत भगवान बुद्ध ने कहा की सभी मानव एक है इसमे कोई भी जातीपाती नही है वर्ण व्यवस्था नही है ऐसे अपने उपदेश से अछुत हो, या ब्राह्मण हो सभी धर्म के अनुयायी बन गये| इतना ही नही जब बौद्ध धम्म मे दीक्षा लेते है तब वे व्यक्ती कि कोई जाती नही होती है | निस्वार्थ भाव से यहापे कोई बडा नही कोई छोटा नही है ऐसा बडा उपदेश तथागत भगवान बुद्ध ने अपने प्रवचन दिया है | इतना ही नही तो स्त्री को भी मुक्ती मिल सकती है वो ज्ञान अर्जित कर निर्वाण को प्राप्तकरसक्ती है त्रिपिट के सुत्तपिटक ग्रंथ मे से थेरीगाथा मे जो 79 भिक्षुणी का उल्लेख मिलता है यह बडा प्रमाण है और थेरगाथा मे सब जातीपाती धर्म के भिक्षू

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निर्वाण प्राप्त किय मिलते है | ऐसे अनेक प्रमाण अपने तथागत भगवान बुद्ध ने जो उपदेश दिये है आज यह साहित्य की जरुरी है क्योंकि सभी जातीपाती धर्म पंथ के लोग अपने अपने स्वार्थ मतलब के लिए सभी का इस्तमाल कर रहे है| मगर ऐसा कोई व्यक्ती आगे बढकर आता नही की सभी मानव जाती एक है मानव के लिए धर्म है धर्म के लिए मनुष्य नही है ऐसा कोई वर्तमान मे दिखाई नही देता| इसीलिए छब्बीससो साल पहले ही तथागत भगवान बुद्धने यह कन्सेप्ट क्लिअर कर दी है | यही तो आज वर्तमान मे इसकी आवश्यकता है|

अभी तक अधिकांश दलितो और शोषितो ने बौध्द धम्म नही आपणया हें,इसिलीय वर्ण –व्यस्था और जाती भेद के फलस्वरूप छुआ छुत पैदा होणे के कारण आज भी उनका भयंकर शोषण,अत्याचार,अन्याय,बलत्कार ,हत्या और महीलाओ को नंगा घुमाने की घटनाए आए दिन भारत में होती रहती है| भारतीय संविधान में शोषण के विरुद्ध अधिकार और अन्य कानूनी प्रावधान होने पर भी आज तक शायद ही किसी सवर्ण को इन अपराधो की सजाए दी गई हो| उसका सबसे बडा और मुख्य कारण यह है कि प्रशासन, पुलिस और न्यायालयो में सवर्ण ही बैठे हुए है |चाहे कानून कुछ भी हो, लेकिन इन लोगो की मानसिकता यह है कि जो दलित हजारो सालो से बेगार और गुलामी करते चले आ रहे है, वे लोग आज किस प्रकार स्वतंत्र होकर उनकी बगल में बैठ सकते है |

वर्ण-व्यवस्था और जातिवाद की एक मात्र काट बौद्ध धर्म है| उसका सबसे बडा कारण यह है कि हिंदू धर्म अन्धविश्वास, पाखंड और अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर निर्भर करता है ,जबकी इसके विपरीत बौद्ध धर्म के प्रज्ञा ,शील ,मैत्री और करुणा सर्वोच्च साध्य है ,जिनका अनुशीलन करके व्यक्ती 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय,लोकानुकम्पाय'की और उन्मुख हो सकता है| इसलिए समस्त भारतीयो को डॉ.आंबेडकर के प्रति अपार अनुग्रहित होना चाहिए कि उन्होने मानव मात्र के कल्याण के लिए बुद्ध के मार्ग को प्रशस्त किया | अगर समस्त भारतीयो ने बुद्ध के मार्ग का अनुशीलन किया, तो यह निश्चित है कि भारत का कल्याण अवश्य होगा, अन्यथा विनाश निश्चित है|

''सीतं उण्हं पटिहन्ति, ततो वाळमिगानि च।
सिरिंसपे च मकसे च, सिसिरे चापि वुट्ठियो॥
ततो वातातपो घोरो, सञ्जातो पटिहञ्ञति।
लेणत्थञ्च सुखत्थञ्च, झायितुञ्च विपस्सितुं॥
विहारदानं सङ्घस्स, अग्गं बुद्धेन वण्णितं।
तस्मा हि पण्डितो पोसो, सम्पस्सं अत्थमत्तनो।
विहारे कारये रम्मे, वासयेत्थ बहुस्सुते॥
तस्मा अन्नञ्च पानञ्च, वत्थसेनासनानि च।
ददेय उजुभूतेसु, विप्पसन्नेन चेतसा॥
ते तस्स धम्मं देसेन्ति, सब्बदुक्खापनूदनं।
यं सो धम्मं इधञ्ञाय, परिनिब्बाति अनासवो''ति॥ (चूळव° २९५)।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निष्कर्ष :-

वर्ण व्यवस्था और जाती एक ऐसी एक समस्या है,जिसके उपर तथागत गौतम बुध्द ने कुछ ना कुच्छ कहना अपना धम्म समजा है| वैसेही डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन का लक्ष्य तो वर्ण-व्यवस्था और जाती भेद की समस्या को समाप्त करना ही था,क्योकि वह स्वयं अस्पृश्य जाती में उत्त्पन हुए थे और उन्हे अश्पृत्यता के बडे कटू अनुभव रहा है, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर साहबने यह क्रांतिकारी और उनकी विचारधारा तिक्ष्ण बना दिय |

आजभी भारत के विभिन्न क्षेत्रोमे | जाती- वर्ण व्यवस्ता में शूद्रो की श्रेणी मे आने वाली अनेक जाती रहती है| जिंनको बहिषकृत,अछूत अति शुद्र कहते है,तो कुच्छ लोग उनको घृणासे देखते है| अस्पृश्यता कि भयंकर रुढी से इनका जीवन शापित एवं कल्कीत बना दिया गया है,सवर्ण हिंदू वर्गणे कुत्ता बिल्ली गाय आदि जानवर को देविका दर्जा देकर उनकी पूजा अर्चा करते है,मगर शूद्रो का स्पर्ष अपवित्र मानाजाता है | महाराष्ट्र राज्य अस्पृश्य जाती में महार जाती का उल्लेख करते दिखाई देता है |

संदर्भ ग्रंथ सूची

सुत्तानिपात - मूळ पाली नवनालंदा विहार नालंदा
धम्मपद – भिक्षु जगदीश काश्यप
पाली साहित्यका इतिहास , भरतसिह उपाध्याय हिंदी साहित्य समेलन प्रयाग
विनय पिटक , राहुल सांस्कृत्यायन (हिंदी अनुवाद)
बुद्धकालीन वर्ण-व्यवस्था और जाती , डॉ धर्म कीर्ती, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली.
दैनिक वृत्तपत्रे लोकमत लोकसत्ता महाराष्ट्र टाइम इत्यादी
www.tipitaka .org

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies